29. घरेलू हिसाब-किताब

Household Account

पारिवारिक आय के द्वारा व्यक्ति अपनी जरूरतों, आवश्यकताओं को पूरा करता है, जिसके लिए उसे अपनी आय को खर्च करना पड़ता है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अलग आय होती है तथा दैनिक जरूरतें भी विभिन्न होती हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी आय के अनुरूप ही अपनी आवश्यकताओं पर होने वाले व्यय को तय करता है वह अपनी आय को किस प्रकार, कैसे और कहाँ व्यय करता है, पारिवारिक आय कहलाता है। अर्थात् पारिवारिक व्यय व्यक्ति द्वारा अर्जित आय का वह अंश होता है जो पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए निश्चित समय में वस्तुओं एवं सेवाओं पर व्यय किया जाता है।

कान्ति पाण्डेय के अनुसार 'परिवार विभिन्न आर्थिक प्रयत्नों से जो भी धन उपार्जित करता है उसे कैसे, कितनी तथा किस प्रकार खर्च करता है इसे ही व्यय कहते हैं।'

पारिवार व्यय को मुख्यतया दो भागों में विभक्त किया जाता है–

(1) उपभोग व्यय– आय का वह भाग जो उपभोग हेतु विभिन्न आवश्यक सामग्री पर खर्च किया जाता है, वह उपभोग व्यय कहलाता है। प्रत्येक परिवार को प्रतिमाह अपनी आय में से एक निश्चित राशि भोजन, वस्त्र, घर आदि पर अनिवार्य रूप से खर्च करनी पड़ती है। प्रत्येक परिवार की अधिकांश आय उपभोग की वस्तुओं पर ही व्यय होती है।

(2) बचत– उपभोग के बाद जो धनराशि शेष रह जाती है उसे बचत कहते हैं। बचत का उपयोग भविष्य की आवश्यकताओं हेतु किया जाता है, अतः इसे सुरक्षित रखा जाता है या फिर धन को उत्पादक के रूप में विनियोग किया जाता है।

उपभोग व्यय के रूप

(1) निश्चित व्यय– निश्चित अवधि पर जो व्यय दोहराए जाते हैं जैसे–राशन का बिल, मकान किराया, स्कूल फीस इत्यादि निश्चित व्यय के अन्तर्गत आते हैं। इस व्यय की मदें प्रतिमाह एक समान होती है।

(2) अर्द्ध-निश्चित व्यय– आय तथा परिस्थिति के अनुसार यह व्यय परिवर्तित होते रहते हैं। आय अधिक हो तो उच्च कोटि के भोजन एवं वस्त्र पर खर्च किया जा सकता है। इसी प्रकार कम आय होने पर व्यय कम किया जा सकता है। आराम एवं विलासिता की वस्तुएँ इस व्यय के अन्तर्गत आती हैं। त्यौहारों एवं विशेष पर्वों पर किया गया व्यय भी इसी श्रेणी में आता है।

(3) अन्य व्यय– ये व्यय अनिर्धारित होते हैं। यह व्यय व्यक्ति की आय एवं इच्छा पर निर्भर करते हैं। जैसे-मनोरंजन, आभूषण, वस्त्र इत्यादि, व्यक्ति अपनी आय के अनुसार इन पर व्यय करता है।

पारिवारिक आय एवं व्यय की आवश्यकता :

परिवार अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न वस्तुओं पर सेवाओं का उपभोग कर संतोष प्राप्त करते हैं। आय और व्यय एक अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता एवं कार्य क्षमता के अनुरूप आय अर्जित करता है और अपनी इच्छानुसार व्यय निर्धारित भी करता है। मनुष्य आर्थिक क्रियाओं की मूल इकाई है तथा उपभोग व्यय आर्थिक क्रियाओं का संचालक है।

आवश्यकताएँ अनंत होती हैं, जिसके लिए परिवार उपभोग व्यय करता है। उपभोग वस्तुओं की माँग में वृद्धि होने पर उत्पादन की गति और मात्रा भी बढ़ती है। उत्पादित वस्तुओं के विनिमय से व्यक्ति अपनी इच्छित वस्तुएँ प्राप्त कर सकता है। उत्पादित माल के वितरण से मनुष्य अपनी आय प्राप्त करता है तथा आय का विनिमय कर ही वह आवश्यक वस्तुओं को प्राप्त कर उपभोग कर सकता है। इस प्रकार आय एवं व्यय की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। इसी आधार पर विश्व में विभिन्न आर्थिक गतिविधियों का संचालन होता है।

आय एवं व्यय का ब्यौरा (बजट)–

प्रत्येक व्यक्ति अपनी आय का उचित उपयोग कर अधिकतम संतोष प्राप्त करना चाहता है। आय के सदुपयोग हेतु योजनाबद्ध प्रबन्ध करना जरूरी है, इसके लिए उसे आय को व्यय करने से पहले अपना पारिवारिक बजट बनाना चाहिए। पारिवारिक बजट में परिवार की आय एवं व्यय का विस्तृत ब्यौरा दिया जाता है और उसका सम्बन्ध किसी विशेष अवधि (एक माह/एक वर्ष) से होता है।

परिभाषा :–

कान्ति पाण्डे के शब्दों में 'बजट किसी निश्चित अवधि के पूर्व

अनुमानित आय-व्यय के विस्तृत ब्यौरे को कहते हैं।' आय से अधिकतम संतोष प्राप्त करने के लिए व्यय करने से पूर्व आय के अनुसार विभिन्न मदों में पूर्व अनुमानित ब्यौरा तैयार कर लेना चाहिए।

सरल शब्दों में 'किसी परिवार की विशेष अवधि में होने वाली आय और व्यय के विस्तृत ब्यौरे को पारिवारिक बजट कहते हैं।'

बजट का महत्त्व :-

प्रत्येक परिवार में सुख, संतोष, समृद्धि हेतु जरूरी है कि आय एवं व्यय में संतुलन बना रहे। पारिवारिक बजट की सहायता से गृहिणी आसानी से आय-व्यय में सामंजस्य बैठा कर आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है। इसलिए बजट विभिन्न कारणों से महत्त्वपूर्ण है-

* बजट आवश्यकताओं की प्राथमिकता निर्धारण में अत्यन्त सहायक सिद्ध होता है। जरूरी आवश्यकताओं एवं गैर जरूरी आवश्यकताओं को पूरा करने में बजट बनाना उपयोगी रहता है।

* परिवार के आर्थिक लक्ष्य स्पष्ट करने में बजट की भूमिका रहती है। चाहे वह अल्पकालीन लक्ष्य हो या दीर्घकालीन लक्ष्य। बजट की सहायता से वर्तमान एवं भविष्य की आवश्यकताओं का वितरण सुनिश्चित किया जा सकता है।

* बजट व्यक्ति को अपनी सीमाओं का ज्ञान कराते हुए आय-व्यय का वितरण सिखाता है।

* बजट के द्वारा पारिवारिक व्यय के तरीकों का ज्ञान होता है। आय बढ़ाने में सहायता मिलती है। परिवार के सदस्यों में त्याग, मितव्ययता, सहकारिता की भावना आती है।

* एक परिवार को अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए पारिवारिक बजट का निर्माण करना चाहिए।

बजट के मुख्य बिन्दु :-

प्रत्येक परिवार को पारिवारिक बजट बनाते समय निम्नलिखित बिन्दुओं का ध्यान रखना चाहिए-

1. बजट बनाने वाले प्रत्येक व्यक्ति को परिवार की आय का सम्पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है। किसी भी सदस्य को अपनी आय को छुपाना या बढ़-चढ़ कर नहीं बताना चाहिये।
2. जितनी आय प्राप्त हो उससे ज्यादा खर्च नहीं करना चाहिये।
3. अत्यन्त आवश्यक वस्तुओं पर सबसे पहले व्यय करना चाहिये।
4. आय का वितरण इस प्रकार से होना चाहिये कि परिवार के सभी सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सके।
5. बजट में लचीलापन होना चाहिये ताकि आवश्यकता पड़ने पर उसमें परिवर्तन किये जा सके।

पारिवारिक बजट के प्रकार :-

1. संतुलित बजट : इसमें पारिवारिक आय एवं व्यय में सदैव संतुलन रहता है। यह एक साधारण बजट कहलाता है। इसमें अनुमानित आय एवं प्रस्तावित व्यय समान होता है।

2. बचत का बजट : इस प्रकार के बजट में पारिवारिक व्यय, आय से कम होता है। अत: यह आदर्श बजट माना जाता है। इससे परिवार को भविष्य में आर्थिक सुरक्षा मिलती है।

3. घाटे का बजट : इस बजट में व्यय, पारिवारिक आय की तुलना में अधिक होता है। घाटे की पूर्ति उधार या ऋण लेकर पूरी की जाती है।

बजट के विभिन्न मद :-

- भोजन : अनाज, मसाले, घी, तेल आदि।
- वस्त्र : पहनने, ओढ़ने के वस्त्र, घरेलू कपड़े, चादर आदि।
- आवास : मकान किराया, मकान निर्माण, धुलाई, पुताई आदि।
- शिक्षा : स्कूल फीस, हॉस्टल खर्च, कॉपी-किताब खर्च आदि।
- स्वास्थ्य : डॉक्टर की फीस, दवाई, हॉस्पीटल शुल्क आदि।
- यातायात : वाहन, पेट्रोल, बस किराया आदि।
- मनोरंजन : घूमना, खेल सामग्री, टी.वी., पिकनिक आदि।
- अन्य व्यय : अन्य खर्चे- नौकर का वेतन, बिजली खर्च आदि।
- बचत : भविष्य के लिए सुरक्षित रखा जाने वाला आय का अंश।

बजट बनाने की विधि :-

पारिवारिक बजट एक माह के लिए बनाया जाता है। बजट बनाने में व्यक्ति को आय के सभी स्रोतों से प्राप्त आय को मासिक आय में जोड़ना चाहिए। फिर पारिवारिक सदस्यों की आवश्यकतानुसार विभिन्न मदों का निर्धारण कर लेना चाहिए। किस मद पर कितना खर्च करना है यह परिस्थिति व आवश्यकता के प्रकार के अनुसार तय करना चाहिए। बजट बनाने का मूल सिद्धान्त है कि जितनी आय कम होगी, जीवन की अनिवार्य जरूरतों पर उतना ही अधिक प्रतिशत व्यय होगा। इसी सिद्धान्त पर अर्थशास्त्री अर्नेस्ट एंजिल ने जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं पर जीवन स्तर के अनुकूल व्यय का प्रतिशत निर्धारित किया है जिसे हम तालिका द्वारा आसानी से समझ सकते हैं।

तालिका 29.1 : आय के अनुरूप विभिन्न मदों पर प्रतिशत व्यय-

क्र.सं.	व्यय की मदें	व्यय का प्रतिशत		
		निम्न वर्ग	मध्यम वर्ग	उच्च वर्ग
1.	भोजन	60	55	50
2.	वस्त्र	18	18	18
3.	आवास	12	12	12
4.	ईंधन व प्रकाश	5	5	5
5.	शिक्षा, स्वास्थ्य व मनोरंजन	5	10	15

उपरोक्त सारणी के अनुसार, आय में वृद्धि के साथ भोजन पर होने वाला व्यय प्रतिशत घटता है, लेकिन शिक्षा, स्वास्थ्य एवं मनोरंजन

पर व्यय प्रतिशत बढ़ता है।

आदर्श बजट :-

पारिवारिक व्यय जब आय से कम होती है तथा आय का कुछ हिस्सा बचा कर भविष्य के लिए रख लिया जाता है, आदर्श बजट कहलाता है। आय व बचत दोनों में वृद्धि होती है। एंजिल के सिद्धान्त में बचत का प्रावधान नहीं है, जबकि आज के युग में बचत आवश्यक मद है।

एंजिल के सिद्धान्त में परिवर्तन करके बचत को शामिल कर नीचे उदाहरण के तौर पर तीन वर्गों का अनुमानित बजट दिया गया है, जिसमें सदस्यों की संख्या एवं उम्र समान है।

बजट का सिद्धान्त घरेलू आय-व्यय का विभिन्न मदों पर प्रतिशत निर्धारण कर एक सफल आदर्श बजट बनाने में मदद करता है। प्रस्तुत बजट एक अनुमानित बजट है, यह पारिवारिक आवश्यकताओं, परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित कर लेना चाहिए।

घरेलू हिसाब-किताब-

पारिवारिक आय सीमित होती है, जिसे ध्यान में रखकर पारिवारिक सदस्यों की आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिये। आय का हिसाब-किताब रखकर, गृहस्थी को सुचारु रूप से चलाने की व्यवस्था करनी पड़ती है। गृहिणी के पास लिखित रूप में लेखा-जोखा रखने से खर्च बजट के अनुसार हो रहा है या नहीं, इसका ज्ञान हो जाता है। आय-व्यय का उचित सन्तुलन बनाए रखना आसान हो जाता है। साथ ही अनावश्यक व्यय पर नियंत्रण रहता है। यदि खर्च में वृद्धि हो जाए तो उसे हिसाब रखकर कम किया जा सकता है। इस प्रकार महीने के अंत में बजट के अनुसार बचत भी संभव हो जाती है। घरेलू खर्च में मितव्ययता आती है तथा अनावश्यक व्यय पर प्रतिबन्ध लगता है। हिसाब की आदत डालना उचित व भविष्य के लिए भी लाभदायक रहता है।

हिसाब-किताब की आवश्यकता :-

1. धन व्यवस्थापन के लिए।
2. प्रत्येक वस्तु की कीमत व निश्चित समय में किए गए व्यय की जानकारी के लिए।
3. अनावश्यक खर्चों पर रोक लगाने के लिए।
4. सोच-समझकर खर्च करने के लिए।
5. पारिवारिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए।

हिसाब-किताब के प्रकार :-

1. प्रतिदिन का हिसाब-किताब- प्रतिदिन किए जाने वाले हिसाब का ब्यौरा रखा जाता है।

तालिका 29.3 : प्रतिदिन का हिसाब-किताब

दिनांक	वस्तु	मात्रा	खर्च
01.09.2016			
02.09.2016			
03.09.2016			
04.09.2016			

2. साप्ताहिक, मासिक हिसाब-किताब- सप्ताह के अंत में प्रतिदिन के

तालिका 29.2 परिवारों का अनुमानित बजट

क्र.सं.	व्यय के मद	विभिन्न आय वर्ग (आय प्रतिमाह (रुपये में)					
		निम्न (5000)		मध्य (20,000)		उच्च (60,000)	
		व्यय	%	व्यय	%	व्यय	%
1.	भोजन	300	60	10,000	50	270000	45
2.	वस्त्र	750	15	3000	15	9000	15
3.	आवास	550	11	2200	11	6600	11
4.	ईंधन, प्रकाश एवं पानी	250	5	1000	5	3000	5
5.	शिक्षा	100	2	800	4	3000	5
6.	स्वास्थ्य	100	2	800	4	3000	5
7.	मनोरंजन	50	1	800	4	3000	5
8.	बचत	200	4	1400	7	5400	9
	कुल	**5000**	**100**	**20000**	**100**	**60000**	**100**

खर्च ब्यौरे को जोड़कर हिसाब का ब्यौरा रखा जाता है। इसी तरह सप्ताहों का खर्च जोड़कर मास का खर्च ब्यौरा रखा जाता है।

तालिका 29.4 : साप्ताहिक व मासिक हिसाब-किताब

माह जनवरी, 2016

सप्ताह/वार	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
प्रथम सप्ताह							
द्वितीय सप्ताह							
तृतीय सप्ताह							
चतुर्थ सप्ताह							
कुल							

3. वार्षिक हिसाब-किताब- वर्षभर का हिसाब-किताब का ब्यौरा रखा जाता है।

तालिका 29.5 : वार्षिक हिसाब-किताब

माह	आय	व्यय	आय से कम/अधिक खर्च
जनवरी			
फरवरी			
मार्च			
अप्रैल			

हिसाब-किताब के प्रकार-

1. बाजार खर्च :- बाजार का हिसाब रखना गृहिणी के लिए बहुत जरूरी है क्योंकि आय का मुख्य भाग बाजार से घरेलू वस्तुएँ, खाद्य सामग्री, फल, सब्जी, कपड़ा आदि लाने में व्यय होता है। इन वस्तुओं पर होने वाले व्यय का प्रतिदिन रिकार्ड रखना चाहिए। बाजार खर्च हिसाब-किताब हेतु डायरी बनानी चाहिये जिसमें रोज शाम को हिसाब लिखना चाहिये।

2. दूध का हिसाब- दूध का हिसाब महीने के अंत होने पर किया जाता है। प्रतिदिन दूध पर होने वाले खर्च का ब्यौरा गृहिणी को रखना चाहिए, जब दूध खर्च का ब्यौरा व्यवस्थित एवं विस्तृत लिखा हुआ हो तो हिसाब करने में असुविधा नहीं होती है।

3. धोबी का हिसाब- धोबी से धुलाये जाने वाले वस्त्रों का ब्यौरा रखा जाता है। इस खाते में गृहिणी प्रतिदिन धोबी को दिए जाने वाले कपड़ों का तारीखवार, दिए गए कपड़ों की संख्या का हिसाब-किताब रखती है। इसके अलावा इस्त्री के लिए दिए गए कपड़ों का हिसाब भी रखा जाता है और यदि शुष्क धुलाई करवाई गई हो तो उसका भी लेखा रखा जाता है ताकि महीने के अंत में कोई कठिनाई नहीं आए। धोबी के हिसाब की कॉपी या डायरी का निर्धारित स्थान होना चाहिए ताकि धोबी के साथ हिसाब-किताब करने पर सुविधा रहती है।

4. सम्पत्ति का हिसाब- इस तरह के हिसाब के अन्तर्गत मकान, कार, स्कूटर आदि के खरीद कर जमा कराने की रसीद, गाड़ी का बीमा आदि का ब्यौरा रखा जाता है। अलग फाइल बनाकर बिल जमा कराने की रसीदें लगाई जाती हैं।

5. बीमा या अन्य बचत साधन का हिसाब- जब धनराशि का विनियोग बीमा, बैंक या पोस्ट ऑफिस या अन्य किसी भी बचत खाते में किया जाता है, तब उससे संबंधित रसीदें, सभी कागज एक जगह व्यवस्थित फाइल किए जाते हैं। शेयर, ऋण पत्र, मियादी जमा आदि का विवरण भी इसी खाते में लिखा जाता है।

हिसाब-किताब की विधियाँ-

1. पृष्ठ विधि- यह अत्यन्त सरल, लचीली विधि है। खर्च की राशि का हिसाब एक पृष्ठ पर लिखकर उसे दरवाजे या किसी बोर्ड पर लगाकर टाँग देते हैं, जैसे-जैसे खर्चा होता है, नोट कर लिया जाता है। सप्ताह या माह के अंत में खर्च जोड़कर अनुमान लगाया जा सकता है कि खर्च किस अनुरूप हो रहा है।

2. लिफाफा विधि- इसमें एक लिफाफे में निश्चित खर्च किए जाने वाले मदों के हिसाब से राशि रखकर कुल राशि लिख दी जाती है, खर्च के लिए निकालने पर उस पर लिख दिया जाता है इसके अलावा प्रत्येक मद के लिए अलग लिफाफा भी रखा जा सकता है।

3. नोट बुक विधि- एक कॉपी में दिनांक या वार या क्रमानुसार खर्चों का हिसाब-किताब लिखा जाता है। इस प्रकार लम्बे समय तक खर्चों का हिसाब रखा जा सकता है तथा मूल्यांकन भी किया जा सकता है।

4. कार्ड भरना विधि- परिवार के प्रत्येक सदस्य को अलग-अलग खर्च के हिसाब से धनराशि दे दी जाती है। वे एक कार्ड पर महीने भर खर्च का हिसाब लिखते रहते हैं। माह अंत में सभी सदस्यों के कार्ड से महीने भर के खर्चों का हिसाब-किताब रख सकते हैं।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु :

1. परिवार में जो भी धन अर्जित होता है उसे कैसे, कितना, किस प्रकार खर्च करना है, इसे व्यय कहते हैं।
2. प्रत्येक परिवार में कुछ व्यय निश्चित होते हैं जैसे-खाना, शिक्षा, कपड़े, मकान इत्यादि और कुछ अर्द्धनिश्चित होते हैं जैसे-शादी, पार्टी, मनोरंजन इत्यादि।
3. आय एवं व्यय के विस्तृत ब्यौरे को बजट कहते हैं जो कि प्रत्येक परिवार के लिए आवश्यक है।
4. बजट बनाने से भविष्य के लिए बचत की जा सकती है।
5. बजट मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं। लेकिन बचत के बजट को आदर्श बजट कहा जाता है।
6. परिवार के आय एवं व्यय परिवर्तन भी होते रहते हैं।
7. परिवार में आय को व्यवस्थित रूप से खर्च करने के लिए जो प्रतिदिन, साप्ताहिक या मासिक ब्यौरा लिखा जाता है उसे घरेलू हिसाब-किताब कहते हैं।

8. प्रत्येक परिवार आय को विभिन्न मदों पर खर्च करता है, एंजिल के नियम के अनुसाार आय में वृद्धि के साथ भोजन पर किए जाने वाला व्यय कम एवं विलासिता सम्बन्धी आवश्यकताओं पर बढ़ जाता है।

9. हिसाब-किताब रखने की मुख्य चार विधियाँ हैं। पृष्ठ, लिफाफा, नोट बुक एवं कार्ड भरना।

10. घरेलू हिसाब-किताब रखने से आय-व्यय का पता चलता है, बचत की जा सकती है, अनावश्यक खर्चों को कम किया जा सकता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न :

1. निम्न प्रश्नों के उत्तर चुनें :

(i) निश्चित अवधि पर जो व्यय दोहराये जाते हैं, वे हैं-

(अ) उपभोग व्यय (ब) निश्चित व्यय

(स) अर्द्ध-निश्चित व्यय (द) पारिवारिक व्यय

(ii) उपभोग वस्तुओं की माँग में वृद्धि होने पर बढ़ती है-

(अ) उत्पादन की गति (ब) उत्पादन की गति व मात्रा

(स) उत्पादन की मात्रा (द) इनमें से कोई नहीं

(iii) बजट का तात्पर्य है-

(अ) पारिवारिक आय का ब्यौरा

(ब) पारिवारिक खर्चों का ब्यौरा

(स) आय-व्यय का विस्तृत ब्यौरा

(द) विभिन्न मदों पर किया जाने वाला व्यय

(iv) घरेलू हिसाब-किताब का प्रकार है-

(अ) बाजार खर्च (ब) धोबी का हिसाब

(स) सम्पत्ति का हिसाब (द) उपरोक्त सभी

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :

(i) .... आर्थिक क्रियाओं का संचालक है।

(ii) उपभोग के बाद बचने वाली धनराशि .... कहलाती है।

(iii) .... व्यय, आय एवं परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं।

(iv) आय को व्यय करने से पहले .... बजट बनाना चाहिये। (पारिवारिक)

(v) घरेलू हिसाब से .... का उचित संतुलन बनाए रखना आसान हो जाता है।

3. पारिवारिक व्यय किसे कहते हैं, इसे कितने भागों में विभाजित किया जा सकता है, समझाइये?

4. उपभोग व्यय पर प्रकाश डालते हुए इसके प्रकारों के बारे में बताएं।

5. आय एवं व्यय एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। कैसे?

6. बजट की परिभाषा एवं प्रकार को लिखिये।

7. घरेलू हिसाब-किताब की आवश्यकता लिखिये।

8. घरेलू हिसाब-किताब लिखने की मुख्य विधियों के नाम लिखिये एवं किसी एक को समझाइये।

उत्तरमाला :

1.(i) ब (ii) ब (iii) स (iv) द

2. (i) उपभोग व्यय (ii) बचत (iii) अर्द्ध निश्चित (iv) पारिवारिक (v) आय व्यय